मनुष्य बनो

वा० मू०
७-००

शरणागति,

शुभ संकल्प,

क्षमा,

प्रेम,

निष्काम कर्म,

ब्रह्मचर्य पालन,

'मनुष्य बनो' के नियम

१—शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिकता के नियमों का वास्तविक दृष्टि-कोण से प्रचार करना और प्रेम, सभ्यता, आदर, शिष्टाचार, सदाचार सहनशीलता और संयम की शिक्षा देना इसका मुख्य उद्देश्य है। मनुष्य बनना और बनाना।

२—सन्त महात्माओं और ऋषियों की वाणी को सरल, सुबोध और साधारण भाषा में प्रचार करना।

३—सामाजिक उन्नति कारक तथा देशहित कारक लेखों को भी स्थान दिया जायगा।

४—किसी धर्म, पंथ या सम्प्रदाय के खण्डन सम्बन्धी लेख नहीं छापे जायेंगे।

५—यह पत्र प्रत्येक मास की १५ तारीख को प्रकाशित हुआ करेगा।

६—लेखों के घटाने बढ़ाने और छापने न छापने का अधिकार सम्पादक को होगा। लेख सम्पादक के नाम भेजे जॉय।

७—ग्राहकों को पत्र लिखते समय ग्राहक नम्बर व पता साफ साफ अवश्य लिखना चाहिये। उत्तर के लिये जबावी कार्ड आना चाहिये वी० पी० पीं० से पत्रिका नहीं भेजी जायगी। इसका वार्षिक मूल्य ७—०० है।

८—यदि किसी मास का पत्र ठीक समय पर न पहुँचे तो पहले अपने यहां डाकखाने से पूछताछ करके वहां से जो उत्तर मिले व अगला अङ्क निकलने से एक सप्ताह पूर्व तक कार्यालय में पहुंचने पर ही दूसरी प्रति बिना मूल्य भेजी जा सकेगी।

९—प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र, ग्राहक होने की सूचना, मनीआर्डर आदि मैनेजर के नाम से भेजने चाहिये। मनीआर्डर कूपन पर अपना पता साफ साफ लिखना चाहिये। और पते की तबदीली भी।

R. S.

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदं: पूर्णात्पूर्ण मदुच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवावशिष्यते ॥

❋ मनुष्य बनो ❋

वर्ष ३०	भाद्रपद सं० २०३७ वि० सितम्बर, १९८०	संख्या १२

गुरु महिमा

गुरु गम अगम अलौकिक अद्भुत, शोभा कही न जाय ।
महिमा अकह अपार सिंधुवत, अधिक अधिक अधिकाय ॥

घट घट बासी प्रभु अविनाशी, चेतन सहज उदासी ।
रूप अरूप स्वरूप अनूपम, आनन्दघन सुखरासी ॥

नारद शारद शेष वरुण रवि, शशि को बरने पारा ।
परमतत्व शुभ सदन अयन छबि, रचना के आधारा ॥

ज्ञान ध्यान का पन्थ चलाया, योग युक्ति बतलाई ।
भव भय जाल से जीव निकारा, यम की फाँस कटाई ॥

कलि मल दहन बिभंजन त्रय दुख, दीन अधीन सहाई ।
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, धन जिन यह गति पाई ॥

—०—

प्रवचन

हुजूर परमदयाल परमसन्त पं० फकीरचन्द जी महाराज

मानवता मन्दिर होशियारपुर (पंजाब)

दि० १०-८-१९८०

भजन बिन जीवन निष्फल,
मृग तृष्णा मरूस्थल भूमि-सार हीन निर्जल
काल कर्म माया बरिमाई, फाँसे जीव निर्बल ।
संभल संभल कर पग का धरना-कहीं न जाना फिसल,
भजन प्रताप बचे कोई प्राणी-शब्द के मार्ग चल ।
राधा स्वामी दीन सहाई, अपना दे निज बल।
दाता दयाल का एक शब्द मुझे हर समय याद आता रहता है ।
छिन-छिन उमर घटत दिन राती, कभी साँझ कभी प्रभाती,
माया मोह महा उतपाति, इनसे लगा मन फकीरवा ।।

उमर गुजर गई जिन्दगी बदलती हुई चली आ रही है। आज यह शब्द सुना कि भजन के बिना जिन्दगी निष्फल है। मैंने भजन करते हुए आयु गुजार दी। भजन कहते हैं लनिता को। लीन होना यानि धुन अनहद के सुनने को। जब इन्सान मन को छोड़कर अर्थात् मन के विचारों को भूल कर वाकी उसकी जो अपनी अवस्था रह जाती है उस अवस्था में ठहरना है। तो उस ठहरने का नाम भजन है।

"मृग तृष्णा मरुस्थल भूमि सार हीन निर्जल"

जिस तरह से चमकती तो रेत रहती है मगर हिरण उसे पानी समझकर उसके पीछे दौड़ता है। और भ्रम में रह कर मर जाता है। ऐसे ही हम लोग इस मन के चक्र में आकर तरह-तरह के विचार दौड़ाते है। कभी कहीं, कभी कहीं मगर जब इन्सान को मन के रूप

का पता लग जाता है तो फिर वह माया के पीछे नहीं दौड़ता, बल्कि भजन के जरिये अपने आप में ठहर जाता है ।

आज यहाँ मानवता प्रचारक के श्री रतन चन्द जी आये हुए हैं जो कन्या कुमारी तक घूम कर आ रहे हैं और स्कूलों में तथा भिन्न भिन्न स्थानों पर मानवता का प्रचार करते हैं। मैंने भी मानवता की अवाज उठाई। क्यों ? क्योंकि मन अर्थात् जिस तरह के इन्सान के मन के विचार होते हैं उसके अनुसार वह अपनी जिन्दगी गुजारता व काम करता है इसलिये मैंने अनुभव के बाद मन की जिन्दगी में सुखी व शान्त रहने के लिये 1945 में इन्सान बनो की आवाज उठाई मैंने बहुत कुछ कहा और किताबे लिखीं जिन्दगी में बहुत कोशिश की कि इन्सान को ठीक रास्ता दिखाऊं मगर दुनियाँ का क्या बना ? क्या दुनियाँ इन्सान बन गई ? मैं देखता हूँ मेरा अनुभव सिद्ध करता है कि मैं असफल रहा। इन्सान इस लिये मैंने यह समझा कि यह मेरा अपना ही एक विचार भ्रम व जनून है मैंने जो कुछ भी किया या यह करते हैं यह हम अपने ही मन के भाव के विचार के प्रभाव में आकर करते है और अपने ही दिल लगाने वक्त काटने व पेट भरने के लिये करते है हर एक आदमी अपने ही मन के कर्मो व ख्यालात को भोगता है ।

सिद्ध हुआ कि जो किसी का सुधार करना चाहता है। वह अपने ही भ्रम और धुन में फँसा हुआ है इस लिए सन्तों का उपदेश और मानवता की शिक्षा केवल उन आदमियों के लिये है जो चाहते हैं कि उन को सुख मिले और शान्ति मिले वरना जिस को गरज नहीं है वह किसी की बात कब सुनता है जो नहीं चाहते उनको तुम लाख कोशिश करो सिर पटक कर मर जाओ कोई नहीं सुनता। मैं तो थक गया। दुनिया में कितने उपदेश देने वाले होते हैं। कहीं धर्म का प्रचार है कहीं किसी धर्म ग्रन्थ का प्रचार है। कहीं कुछ है मगर

सुनता कौन है ! तो इसका इलाज क्या है। इलाज कुदरत करेगी। इन्सानी नस्लें पर मुश्किल आयेगी। और जब ये दुःखी होंगे मरेंगे, कटेंगे, रोयेंगे फिर वे सोचेगें तब शायद किसी को समझ आयेगी। ये मेरी अपनी जिन्दगी का तजुर्बा है।

मैंने इन्सान बनो का क्या समझा ? इंसान किसे कहते हैं ? मानव को, कबीर साहब ने कहा है।

गुरु पशु, त्रिया पशु, वेद पशु, नर पशु संसार।
मानुष आदि जानिये जामें विवेक विचार।

मनुष्य वह है जिसमें समझ और विवेक। जिसके मन का विकास हुआ तो इन्सानी जमीर या हमारी Conscousness के चार भाग हैं। बुद्धि, ज्ञान विवेक और अनुभव। बुद्धि और चीज है ज्ञान और न्यारी है विवेक और हैं अनुभव और है। एक बुद्धि या अक्ल और एक होता है बिवेक अक्ल तो प्रत्येक जानवर में है। हर एक आदमी जानवर है बानर वृक्ष व नवजात में बुद्धि है। हरेक में बुद्धि मौजूद है। तुम कहोंगे वृक्षों व पक्षियों में भी बुद्धि है ? हाँ ! लाजवन्ति के बूटे को यदि मनुष्य हाथ लगाये तो वह सुकड़ जाता है। क्योंकि उसके हाथ से जो दवा निकलती है उसको वह पसन्द नहीं करता। औरत हाथ लगाये तो वह नहीं सुकुड़ता। पक्षियों में एक बया होता है वह अपना घोषला बहुत सुन्दर बनाता है उसमें रोशनी के लिये जुगनु को अन्दर रख लेता है। पक्षिओं और पशुओं में विवेक पैदा नहीं होता। ये विवेक, ज्ञान और अनुभव केवल इन्सान के अन्दर होता है व आता है।

जिस मनुष्य मैं विवेक नहीं है वह हैंवान के बराबर है उसको तुम इन्सान नहीं कहते। चाहे देखने में वह इंसानी शक्ल वाला है मगर इन्सानी शक्ल में पशु है। शब्द में आया है।

भजन बिन जीवन निष्फल ।

जीवन निष्फल कब होता है । जब हमारा मन किसी बाहर की चीज की ओर दौड़ दौड़े कर उसको प्राप्त करने की फिक्र चिन्ता व गम में लगा रहता है । जीवन का निष्फल पना । हम मृग तृष्णा जल के लिए अपने मन के विचार व आशाओं में फंसे उनके पीछे दौड़ते है । इनकी आशाओं से परे हट कर अपने आप में ठहर जाना और इसकी चालों के पीछे दौड़ना और मन के चक्कर में आकर फिक्र व गम न करना, ये है भजन । मगर यहाँ तक पहुंचने के लिये हम मंजिले हैं पहले शारीरिक भावनाओं को रोकना पड़ेगा फिर मन के संस्कारों व संकल्पों को छोड़ना पडेगा आदि-आदि बिना समझ और विवेक के मनुष्य का जीवन बिल्कुल निष्फल है वह धोखे खाता है चक्कर भी खाता है । अपने मन के चक्कर में आकर दुःख सुख उठाता और अपने आप में जीव स्वयं सुख व खुशी आनन्द और शान्ति स्वरुप है उसमें नहीं ठहरता । विवेक न होने से अपने आप को गुरु के साथ औरत के साथ किसी बड़े आदमी के साथ या मजहली पुस्तकों के साथ बाँधता है । और उनके कहे हुए को दोहराता है वो पशु समान है । हम लोग गुरू पशु हैं, स्त्रियाँ पशु हैं, गुरु के रुप को न समझना गुरु को ही जपकर मारना ये गुरु पशु पना है । इस प्रकार के अविवेक की की वजह से ही देख लों । कश्मीर में मुहम्मद साहब का एक बाल गुम हो जाने पर हजारों आदमियों का खून हो गया या मस्जिद की एक ईट गिर जाय या कुरान शरीफ, रामायण या ग्रन्थ साहब के एक-दो पन्ने फट जाय तो मजहली दुनियाँ के पशुओं के सींग क्या-क्या गुल नहीं खिलाते । क्या कुछ खून खराबी नहीं होता मैं भी गुरु पशु था । मैं इन्कार नहीं करता मगर दाता की दया से आप सत्संगियो की सेवा करने मन व माया के रूप में समझा विवेक आ जाने से मेरी आंख खुली । तब

में मन को छोड़ कर अपने आपमें ठहरने के योग्य हुआ।

औरतों को औरत के विचार से न देख कर उसके पीछे दौड़ा। उसका अर्थ है स्त्री पशु या गुरु पशु। ऐसे आदमी को औरत जूते भी मारती है मगर काम के वस में हुआ जूते भी सहता है गाँधी जी या दूसरे महात्माओं के साथ बंधे हुए हैं। इसका परिणाम भी यही होता है कि इन्सान पक्ष पात हो जाता है द्वेषी हो जाता है। वह रुह अपने विचार को अच्छा समझ कर दूसरो की बुराई करता है। महात्मा गाँधी अपने समय के सच्चे पोलिटीकल लीडर थे। मगर रुहानि दुनियाँ के सन्त नहीं थे। महात्मा गाँधी के काम ने पार्टीशन में क्या कुछ नहीं किया।

हजारों की जाने गई। जायदादो का नुक्सानहुआ और हम लोगों को जो तकलीफ हुई वो सब जानतेहैं। उनका काम पोलिटीकल लाइन में सराहना के योग्य था। उन्होने मरण व्रत हड़ताल (Non-cooperation) समय केविचार से जारी किया वह था पिछले बुर्जुग जो कुछ कर गये वो उस समय के अनुसार ठीक था मगर इस समय के लिए नहीं। हम उन की इज्जत करते हैं। मगर उन के कामों की रुहेखाँ को न समझते हुए जो काम उन्होंने किये हैं अगर वह काम अब करते हैं तो लाभ नहीं होंगा। वैसा ही करने वाले ये सब पशु हैं ये बैल की भाँति बंधे हुए हैं और जब तक विवेक नहीं है वह इन्सान नहीं है कबीर साहिब का एक शब्द है। जिसमें उन्होने यही कहा है कि हम सब एक जगह बंध गये हैं। टेकी हो गये है। विवेक से काम नहीं लेते।

जग में मानव कोई न देखा।
जो देखा सो बैल बना है।।
बैल पशु के रूपा ।

॥ मनुष्य बनो ॥

बैल समान फिरे नित डोले॥
क्या परजा क्या भूपा।
कोई बैल बना गोरखा का।
कोई बैल शंकर का॥
कोई बैल हैं रीत रसम का।
कोई मिट्टी कंकर का॥
कोई बैल है चार वेद का।
कोई षट दर्शन का॥
अपनी किसी ने खबर न पाई।
देखा न मुख दर्पण का।
पथ के बैल पथ में डोले।
भेष भिखारी लाखों॥
ये सब पशु है नर नहीं कोई।
देख ले अपनी आंखो।
गुरु पशु, नर पशु, स्त्री पशु।
वेद पशु संसार।
मानुष सोहि जानिये।
जामे विवेक विचार।
कहे कबीर सुनो भाई साधो।
बैल से बचकर रहना।
पक्ष पात की सीग अड़ेगी।
दुःख कलेश क्यों सहना॥

कबीर साहिब का कहने का सारा अर्थ ये है कि किसी गुरु किसी बड़े आदमी या किसी मजहब के पशु मत बनो। इन्सानियत के पशु बनो। विवेक और समझ के पशु बनो। और अनुभव को

अपनाओ दुनिया में हरेक काम विवेक के साथ होना चाहिये।

विवेक क्या है ? आत्मा और अनात्मा या आत्मा या मन में समझ करना विवेक है। इस विवेक ने मेरें कर्मो पर कैसे असर किया। इससे मुझे क्या मिला। मुझे समझ आ गई कि इन्सान संकल्प और विचार में बड़ी ताकत है। ये विवेक कैसे मिला जिन्दगी के तजुर्बे से। कि स्वप्न का विचार जो हमारे बस में नही है या जो हम नीयत से नहीं करते वह हमारे शरीर पर असर करता है। स्वप्न में हमें क्रोध आता है। किसी को मुक्का मारते हैं तो हमारा हाथ हिल जाता है। कोई डरावनी शक्ल देखते हैं हम डर जाते हैं हमारी जवान बड़ बड़ा जाती हैं। विचार से औरत बना लेते हैं। हमारा वीर्य निकल जाता है। तो जाग्रत में हम जो सोचते है विचार करते हैं उसका असर हम पर क्यों नहीं आयेगा। इसलिए जाग्रत में हम अपने भाव शुभ रखते हैं। कल्याणकारी सुख और शान्ति देने वाले विचार रखता हूं। अपने मन से किसी से नफरत द्वेष, चार सौ बीस, हेरा फेरी, घृणा, ट्रस्ट, कीना, किसी के साथ चालाकी, किसी के साथ क्रोध व नफरत नहीं करता। मगर किसी समय गिर जाता हूँ। इसी प्रकार अपने कर्म ठीक करता हूं और अपने मन साफ करने का कोशिश करता हूँ। जो व्यक्ति ऐसा करता है मैं उसको मानव समझता हूँ। उसको विवेक आ गया। चाहे वह मन में गिरने से बच गया। और उसके कर्म आत्मा के स्वभाव के अनुकूल हो गये। ये संसार मन मय है। ये दुनियाँ विचार की है, संकल्प की है। दूसरे अर्थो में माया की दुनियाँ है। जैसा जिसका विचार होता हैं उसके विचार के अनुसार उसकी जिन्दगी या संसार बनता है। और प्रकार का विचार किसी को दिया जाता है अगर वह उसको स्वीकार कर ले तो उसकी जिन्दगी बदल जाती है, व वैसी ही बन जाती है। जैसा ख्याल वैसा हाल। जैसी मति वैसी

गति ।

उदाहरणतः लोकमान्य तिलक ने सबसे पहले आजादी का विचार दिया । देखो उसका कितना विचार फैला कि स्वराज्य मिल गया तो हमारी मुसीबतों व दुःखों का कारण क्या है कि हमारा ख्याल ठीक व शुद्ध नहीं । जिस काम को हम करते हैं उसमें हमारी शुभ भावना नहीं ।

विचार की दृढ़ता के लिये ही हिन्दुओं में सोलह संस्कार बनाये गये हैं । मानवता के उपदेश के लिये सबसे पहला जरूरी बुनियादी विचार ये हैं कि सन्तान को सन्तान के विचार से पैदा किया जाय । तब ही वह हमारे व देश के लिये लाभ दायक सिद्ध होगी । आजकल कोई ऐसा घर नही है जिसको अपनी सन्तान से शिकायत नहीं ।

विशेष २ को छोड़कर तो होती रहती है । दुनियाँ में देखो हर जगह नौ जवान लड़के क्या कर रहे हैं ? क्यों ? क्योकि ये खुदरौ सन्तान है । हम अपने स्वाद के लिये औरतो के पास जाते हैं । बच्चा पेट में आ जाता हैं । हमने नीयत से तो नहीं बच्चा पैदा किया । आदमी और स्त्री अपने मन के जज्जवे में आकर आपस में मिले । अपने आप को वस में नहीं कर सके । इस वास्ते वे मिले इस वास्ते ये आशा करना कि जो खुदरौ सन्तान पैदा हुई है ये अपने आपको वश में कर सकेगा । ये नहीं होगा । ये नहीं होगा । ये नही होगा ।

वह अपने लिये, देश के लिए या संसार के लिए कभी भी लाभदायक नहीं होंगे । ये मैं अपने तजुर्वे के आधार पर कहता हूं । व बच्चे समय से पहले कामी हो जाऐगे । मगर इसमें बच्चों का कोई दोष नहीं है । माँ वाप जब वच्चा पेट में होता है भोग करते रहते हैं । माँ कामातुर होती है उसका असर उस बच्चे पर पड़ता है । वह बच्चा जब पैदा होगा समय से पहले कामी हो जायेगा और बुरी बाते करेगा । ये है जो मैं चेताना चाहता हूँ । जैसा ख्याल वैसा

हाल । ये जितना दोष है सब हमारे माँ बाप का है। अगर किसी का लड़का खराब है। तो मैं कहूँगा उसके माँ बाप खराब है। यदि घरेलू सुख शान्ति चाहते हो तो औलाद को औलाद के विचार से शुभ संस्कार रख कर पैदा करो। विषय विकार से बचो। असलीय को पर्दे में रखने की वजह से आजकल मजहबी अज्ञान से इंसानी नस्ल भिन्न-भिन्न व पथों में बँट गई। कोई देवी का पुजारी कोई कृष्ण जी का पुजारी कोई राम जी का पुजारी कोई किसी का तो कोई किसी का पुजारी। ये ऐसा क्यों है ? क्योंकि विवेक नहीं है। समझ नहीं है। मन की तरंगों में इंसान बह जाता है। मैं आया ही इसीलिये हूं कि भ्रम अज्ञान और जहालत जो मजहबों, पंथों और गुरुओं ने फैलाकर हम गुरुओं को बेवकूफ बना कर लूटा है। इसको साफ कर जाऊँ। ये ही मेरे नाम मेरे गुरु महाराज की आज्ञा है।

एक शब्द वे लिखते हैं।

तेरा रूप है अद्भुत अचरज, तेरी उत्तम देही।
जग कल्याण जगत में आया, परम दयाल स्नेही ।।

इस मजहबी दुनियाँ के झगड़ों को साफ करने और मजहबी द्वेष को। मिटाने के लिए ही मैं ने 'इंसान बनो' की आवाज उठाई है। तो मानवता या इंसानियत क्या है ? पूरी समझ प्राप्त करना क्या है ? असलीयत ये है कि ए इंसान सब कुछ तेरे अन्दर है। तू अपना आप ही है। तू भ्रम व मन के चक्कर में पड़ कर दूसरों का मौहताज हुआ फिरता है। कभी औरत के पीछे दौड़ता है, कभी हुकूमत के पीछे दौड़ता है कभी किसी चीज के पीछे दौड़ता है। इसीलिये इन्सानी सूरत वाले अज्ञानियों को विवेक देने के लिये महा पुरुषों, ऋषियों और सन्त प्रकट होते हैं। सत्संग कराया जाता है और ये भजन रखा हुआ है कि जीव अपने मन के चक्कर में आकर सुख दुःख न उठाये अपने अन्दर प्रेम करना सीखे और अपने आप में ठहराये। अपने आप को अपने आप में ठहराने का नाम भजन है ये मैंने समझा।

काल कर्म माया, बरयाई फँसे जीव निर्बल।
सँभल-सँभल कर पग का धरना कहीं न जाना फिसल ॥

माया यानि बुद्धि काल ये सब ने हम जीवों को काबू किया हुआ है। माया क्या है ? हमारी बुद्धि। इस बुद्धि को साफ करने व असलियत को समझाने के लिए ही किसी काबिल इन्सान के सत्संग की जरूरत है। ताकि मन के चक्कर में आकर फंसने से बच सको इन्सान बन कर रहो शान्ति का जीवन गुजारों। और तुम्हें मजहबी शान्ति घरेलू शान्ति, और रुहानि शान्ति मिल सके।

सबको राधास्वामी।

—+—

दशहरे का सतसंग

मानव सोसाइटी दिल्ली से दशहरे के सत्संग पर मुझे बुलाया है। दोस्तों! मैं बूढ़ा हो गया हूं. कुछ न कुछ शिकायत रहती है। डाक्टर यात्रा करने की इजाजत नहीं देते और यात्रा कर भी नहीं सकता। फिर भी मैं दशहरे के सत्संग पर दि० 18-10-80 की साँय काल को या 19.10-80 को सुबह को दिल्ली पहुँचूगा। कई सज्जन सरसोंहेडी, भीलवाड़ा, कानपुर मिसरिख आदि से मुझे आने के लिये मजबूर करते हैं। दोस्तों! मैं अगर बाहर दौरा लगाता हूँ तो किसी पर एहसान नहीं करता। एक तो अपना कर्त्तव्य जो दाता दयाल ने मेरे जिम्मे लगाया था कि शिक्षा को बदल जाना वह पूरा करता हूँ। दूसरे मन्दिर के लिये चार पैसे ले आता हूं। मगर मजबूरी। जब शरीर नहीं चलता तो मैं मजबूर हूँ। इसलिये जिन सज्जनों को जरूरत हो तो दिल्ली में आकर मुझसे मिल सकते हैं। मैं वहा सालवान हाई स्कूल में दि० 19-10-80 से 21-10-80 तक रहूँगा।

दोस्तो ! मैंने जो कुछ भी अपनी जिन्दगी में । क्रियात्मक जीवन गुजरने से अनुभव किया वह मैंने खुले शब्दों में बिना किसी निजी जरूरत के अपने लेखों और सत्संगों में वर्णन कर दिया । मार्ग साफ कर चला ।ज्यादा दौड़ धूप करने की जरूरत नहीं मगर जिन्होंने अपनी जिन्दगी में मानसिक और शारीहिक ब्रह्मचर्य ज्यादा गवाया या आर्थिक कठिनाईयाँ हैं । उनके लिए इस लाइन पर चलना बहुत मुशकिल है । यह मैं जानता हूं । इसलिये अपनी रोजी के अन्दर खर्च करो । मानसिक और शारीरिक ब्रह्मचर्य रखो । इसका आशय यह नहीं कि औरतो को जबाव दे दो । औरते मर्द की साथी हैं । मगर हम लोगों ने उन्हें मौज मेले का यन्त्र समझ लिया है । यहीं एक draw book है । जो इन्सान को मुशीवत में डालता है । मेरे पास केवल शुभ भावना है और निजी अनुभव है । मैं सच्चे दिल से चाहता हूँ मानव जाति का कल्याण हो। खाने को रोटी, पहनने को कपड़ा । सेहत और मन को शान्ति मिले ।

फकीर

प्रवचन

परम दयाल जी महाराज
मानवता मन्दिर, होशियारपुर

दिनांक ७-८-१९८०

एक सत्संगी काफी अभ्यास करता था । उसके चित्त में आज पांच वर्ष वैराग था और वह इस संसार में रहना नहीं चाहता था । कुछ दिन हुए ने गाड़ी के नीचे आकर आत्महत्या कर ली । उसके रिश्तेदारों ने मुझसे । कि इसकी अकाल मृत्यु हुई हैं इसलिये मेंवे [कुरुक्षेत्र] जाकर उसकी

क्रिया कर्म किया जाय ताकि उसकी सद्गति हो जाय। मैंने उन्हें कहा कि उसकी क्रिया कर्म की जरूरत नहीं है न भेजे जाने की जरूरत है। क्योंकि अकाल मृत्यु तो वह होती है कि इन्सान को पता न हो और अचानक दुर्घटना हो जाए या चारपाई पर पड़े हुए किसी ख्याल में उसकी मौत हो जाय डूब कर या बिजली गिरने से मर जाय तो उसका क्रिया कर्म करना तो जरूरी है। मगर जो व्यक्ति अपने दुनिया के सारे सम्बन्धों को छोड़कर स्वयं मरता है उसका क्रिया कर्म या भेजे जाने की जरूरत मेरी समझ में नहीं हैं। क्योंकि मरने से पहले उसके सारे सम्बन्ध संसार से खत्म हो चुके थे।

देखो ! लव-कुश की लक्ष्मण आदि से लड़ाई हुई। उसके बाद सीताजी जब आई तो उसने कहा कि ऐ ! पृथ्वी माता। अगर मैं सारी आयु सच्ची रही हूँ तो मुझे अपनी गोद में जगह दे दे। जमीन फटी और वह उसमें समा गई। श्री राम चन्द्र जी परिस्थितियों से प्रभावित होकर बैराग में आकर भरत और शत्रुघन के साथ नाव में बैठकर सरजू नदी में डूबकर मर गये। पाण्डवों के बारे में तुमने पढ़ा होगा कि महाभारत के युद्ध में १८ अक्षोनी आदमी मारे गये..... राज छिन गया तो उदासी छा गई। और पांचो के पांचों हिमालय पर्वत पर जाकर बर्फ में गल कर मर गये उनका क्रिया कर्म किसने किया ?

क्रिया कर्म जरूरी है। मगर यह रीति रिवाज नहीं होना चाहिये। बल्कि मरने वाले का जो सच्चा हितेषी हो जैसे पुत्र, दोहता या दूसरे परिवार के आदमी, वे मरने वाले को सच्चे दिल से यह विचार दे कि हमारा तुम्हारा कोई सम्बन्ध नहीं हैं। तू अपने घर जा। मुझे याद है कि जब मेरी पहली पत्नी गुजरी तो मैंने उसका क्रिया कर्म किया। सुहाग की सारी वस्तुये दी पांण्डे ने चावलों के आटे का एक बुत बनाया और मन्त्र पढ़कर मुझे कहा कि इस बुत के पहिले पाव काटो फिर हाथ और उसके बाद गर्दन काटो। इसका क्या अभिप्राय ? इसका मतलब यह है कि मरने वाले की जो झटा होती थी या जिस चीज से उसका सम्बन्ध था वह चीजें उसको क्रिया

कर्म में देनी चाहिये और साथ ही उसके पुतले के साथ ऐसा व्यवहार किया जाता था ताकि मरने वाली आत्मा को अगर वह वहाँ है तो यह मालूम हो जाय कि उन्होंने उसके साथ यह व्यवहार किया है ताकि उसका बन्धन रिस्ते-दारों से छूट जाय।

मैंने अपनी स्त्री के मरने के उपरान्त गरूड पुराण सुना और उसका साराँश एक पुस्तक गरूण पुराण नामक में लिख दिया। आजकल कुरुक्षेत्र आदि में जो अकाल मृत्यु वालों की क्रिया कर्म किया जाता है। वास्तव में इसलिये करते हैं कि पिछले समय वहा महापुरुष रहते थे जो ब्रह्मनेष्ठी होते थे। अर्थात प्रकाश था गायत्री का साधन करने वालों में इच्छा शक्ति बहुत बढ़ जाती है और वह अपने ख्यालों से मरने वाले की आत्मा को ख्याल देते थे। मगर आजकल साधारणतया जो पाण्डे हैं वह साधन नहीं करते। शराब पीते है और मास खाते हैं। तथा धोकाबाजी करते हैं। फिर भेवे (कुरूक्षेत्र) जाकर क्रिया कर्म करने से क्या लाभ। मगर यह एक रीति चली आती है। और हम लकीर के फकीर है।

मेरा अपना तर्जुवा है मेरी पहली पत्नी और भाई की पत्नी के फूल लेकर मैं हरिद्वार गया। गाड़ी से उतरा एक आदमी आ गया। कहाँ के वासी ? कहाँ के वासी ! मैं सीधा सादा आदमी था मैंने उसको अपना नाम और अपने गाँव का नाम वता दिया। उसने कहाँ तुम्हारे पाण्डे हैं वह कनर-वल ले गया जो कुछ पैसा-धेला था सब उसने ले लिया मैंने कहां नाम लिख लो [क्योंकि मेरे भाई ने कहाँ था कि नाम दरज कराकर आना तो उसने तांगा किराये पर कर दिया कि हमारा दफ्तर हरिद्वार की पहाड़ियों पर है वहाँ नाम दर्ज करवा दो। मैं वहाँ गया वह जो पाण्डा था वह तो बिगड़ गया कि जिसने तुमसे पैसा ले लिया वह तो ठग था। वह नाम नही लिखता था। मगर मेरे पास केवल दो रुपये थे मैंने कोट उतारा और कहा कि इसे रख लो और नाम लिख लो। या दो रुपये में से १२ आने सहारन पुर तक के किराये के लिये रहने दो वाकी ले लो। यह उस समय पाण्डों

का हाल था अब का पता नहीं। मैंने वहां से निपट कर गंगा माई को क कि गंगा माई में जीवित हरिद्वार न आऊ। मेंने यह वसियत की है कि मेरा हड्डियाँ मन्दिर में गाढ़ कर उसके ऊपर इन्सान बनो का झण्डा खड़ा कर देना। हरिद्वार मत भेजना। मैं जानता हूँ कि क्रिया कर्म होना चाहिए। मगर किनका ? उनका जो दुनियाँ में फँसे हुए हों जो अपने दिल में सांसारिक इच्छाओं कों रखे हुए मरते हैं। सन्यासी का कोई क्रिया कर्म नहीं क्यों? सन्यासी का मतलव ही यही है कि उसके मन के अन्दर संसार की इच्छाऐ व सम्बन्ध न रहें। इसीलिए जो आदमी संसार से विरक्त होकर किसी न किसी तरह अपनी जान दे देता है मेरी तुच्छ बुद्धि में उसके लिए क्रिया कर्म की कोई जरुरत नहीं वह तो पहले ही मुक्त है। कई महात्मा पुराने समय में अपनी मर्जी से प्राणायाम के तरीके से अपने शरीर को त्याग देते थे। अब वह स्वयं शरीर त्यागने की शक्ति तो रहीं नहीं इसलिये वह मौत का कोई न कोई कारण बना लेते हैं।

मेरे इस विषय को लिखने का कारण क्या है कि जिस व्यक्ति के अन्त: में जिस तरह की वासनायें मौजूद होती है। अगर वह समाधि लगाता है वह साधन अभ्यास करता है तो वे वासनाये बढ़ जायेंगी इसलिये मैं सारी दुनिया को जिस तरह दूसरे गुरु नाम देते है मैं नही देता। मेरी शिक्षा यह है कि पहले अपनी वासनाओं को ठीक करो यही बात हजूर महाराज जी की पवित्र विभूति राय सालिग्राम साहिब जो राधा स्वामी मत के अनुयाई है उन्होंने अपनी प्रेम वाणी में लिखा है कि जिनके मन गन्दे हैं और वह अपने बुरे विचारों को दूर नहीं करना चाहते या उनसे दूर नहीं होते उनको यह साधन बिलकुल नही करना चाहिए वरन् उनका बहुत ही नुकसान होगा। यह वात पृष्ट में दो वार लिखी है। हां अगर मन गन्दा है और आदमी अपने गलत विचारों को महसूस करके उनसे बचने की इच्छा रखता है कि यह बुराई उसमें न रहे फिर वह यह अभ्यास करे तो उसे लाभ होता है।

जैसे मेरी अपनी जिन्दगी देखो ! मैंने १६/१७ वर्ष की आयु में चार काम किये छ: महीने माँस खाया, तीन बार शराव पी, एक बार वैश्या के

पास गया ओर एक बार जूआ खेला। उस कुकर्म के कारण मैं वर्षों रोया ताकि वे जो पाप मैंने किए हैं वह धुल जाएँ इस सिलसिले में रोते हुए नीद आ गई। तो दाता दयाल का रुप प्रगट हुआ तो फिर मैं उनकी शरण में गया। उनकी शरण में जाने से ६–७ वर्ष तक अपने आप को पापी समझ कर हमेशा पुकार किया करता था और अपने ख्यालातों को अपने ही ख्यालातों को अपने ही शब्दों में गाया करता था उस मेरे साधन का यह परिणाम निकला कि मैंने वाकी जीवन में कोई पाप नहीं किया है। मेरे इस विषय को लिखवाने का यह आशय है। वह महात्मा गलती पर हैं जो विना अधिकार व संस्कार के सबको यह साधन बताते है। सबसे पहले आदमी का काफी समय तक सत्संग करना चाहिए ताकि उसे अपने भविष्य के जीवन को गुजारने का मार्ग मिल जाए। फिर उसे दीक्षित करना चाहिए। कबीर साहव से धर्मदास ३० वर्ष तक नाम दान के लिए प्रार्थना करता रहा। ३० वर्षों के बाद उसे शिष्य बनाया। आजकल तो गुरुओं को अपना दायरा बढ़ाने का विचार है। जो भी आया उसे नाम–दान और मैं देखता हूं कि मेरे पास नाम धारी आते हैं। ये दूसरे व्यक्तियों के अतिरिक्त ज्यादा दुःखी है। जिस तरह आज कल नाम दिया जा रहा है इससे ज्यादातर नुक्सान पहुँच रहा है।

पढ़ने वालो यह मेरा निजी अनुभव है। मैं दावा नहीं करता जो कुछ मैंने समझा है यही ठीक है।

—०—

सत्संग परम दयाल जी महाराज
मानवता मन्दिर, होशियारपुर

दिनाँक १५–८–१९८०

स्वतन्त्रता दिवस पर

आज आजादी का दिन है राष्ट्रपति श्री संजीव रैडी ने कल रात देश

को अपना संदेश दिया था ।चूंकि राष्ट्रपति होने के नाते अधिकार रखता हूं आज यहा गुरू महाराज महर्षि शिव व्रत लाल जी का यह शब्द सुनाता हूँ । जो उन्होंने किसी समय मेरे लिए लिखा था ।

"असल तू हे मसदरे कोनीन–तेरी नकल सब ।
ज्ञान ध्यान और गैरि क्या है तेरी ही है अक्ल सब,
जिस्म तू है दिल है तू जान है जाने जहाँ ।
गिर्द तेरे फिर रहे है कुल जमीनो आसमान,
नूर से तेरे मनब्बर आसमा के मेहरोमा ।
तेरी ही अजयत के हैं यह अक्स–कदरो इज्जोजा,
तू है दाना तू है नादा दोनों तुझसे है अयाँ ।
इनके पदों में हमेशा जात तेरी है निहाँ,
लुत्फ दानाई में क्या है लुफ्त नादानी में है ।
इसलिए तू खुद वखुद ही कैदी जिसमानी में है,
तहत फोक वस्त्र का तेरे ही ऊपर इन्हसार ।
जानकर अनजार है अनजान कर है जानकार,
जागता है सोता है दोनो से जब ऊंचे चढ़ा ।
जात का अपने यहाँ आकर तू पाता हैं पता,
पर्देदारी राजदारी तेरी बन गई है शाने फकीर ।
है कभी मफलस की सूरत कभी सच्चा अमीर,
जान अपनी जात को और जात को पहचान ले ।
मरकजे आलम है तू बात मेरी मान ले ॥"

इस शब्द के अर्थ को समझकर अपनी जिन्दगी में जो अनुभव किया और जहाँ मैं पहुंचा वहा बैठकर मैं मानव जाति के लिए सन्देश देता हूं । अगर संजीव रैडी या दूसरे गर्वनरों या मुख्यमन्त्रियों को अपनी पदवी पर आये हुये होने की बजह से सन्देश देने का अधिकार है तो दाता दयाल जी, ने मेरी पदवी (Position) कही हुई है और जिस अवस्था में मैं हूँ मुझे भी

सन्देश देने का हक है। मानना या न मानना यह दूसरे का अपना काम है आजादी के ३० वर्ष गुजर जाने पर भारत वर्ष ने कई दिशाओं में बहुत अच्छा काम किया है। मगर यदि गिरावट है तो केवल यही है। कि हम लोगों का Moral (चरित्र) चला गया। विद्यार्थी अनुशासन में नहीं है। मन्त्री M. P., M. L. A. सभाओं में बैठकर एक दूसरे को बुरा भला कहते है। इसका कारण क्या है ? कारण यह है कि इस समय हम जितने लोग है। असाधारण (आमतौर पर) खुदराओ औलाद है। और खुदराओ औलाद ही पैदा होती है। पुरुष और स्त्रिया नियम बद्ध न रहकर भोग करते हैं। बच्चा पेट में आ जाता है इसलिये जो ज्ञान मैंने अपने जीवन में ग्रहण किया उसके आधार पर सन्देश देना चाहता हूं। कि अगर कोई यह चाहे कि मानव जाति में अनुशासन आ जाए यह नहीं होगा। क्यों ? बीज का और संगत का प्रभाव पड़ता है।

हमारे राष्ट्र में लोग पुरानी संस्कृति के लिए चिल्लाते है। मनु जी महाराज, हमारे आद ऋषि हुए है, उन्होंने संतान को पैदा करने का तरीका बताया है। हर समय पुरानी संस्कृति का ढिंढोरा पीटना एक और बात है और पुरानी संस्कृति का अनुसरण करना एक और चीज है। उनकी संस्कृति को छोड़कर तुम क्या करोगे। इसलिए मैंने इस बात को समझते हुए १९४६ में आजादी की कुन्जी नामक एक पुस्तक लिखी थी उसका अंग्रेजी में भी अनुवाद हुआ है। उसमें मैंने लिखा था कि जो मुसीवत और कष्ट हम हिन्दुस्तानियों को स्वराज्य प्राप्त करने के लिए हो रहा है अगर सुअवसर मिल भी गया तो इससे ज्यादा कष्ट होंगे। वह जो कुछ मेरा अनुभव था वह बिल्कुल ठीक निकला। सरकार चाहे जो कर ले अगर यह नेता चाहे कि देश में अमन, शान्ति हो जाए या असम्भव है। इसका एक कारण तो यह है कि हम इन्सानी नसल ज्यादातर खुदराओ औलाद पैदा हुए हैं। इसलिए अपने आप को अपने नियन्त्रण में नहीं रख सकते। बीज का असर डाला नहीं जायेगा। मगर अगर संगत अच्छी मिल जाय तो उसमें कुछ कमी आ सकती है। जैसे खट्टे के पौधे को मिट्ठे का पैवंद लगाया जाय तो मिट्ठा

तो नहीं होगा मगर सन्तरा या मुसम्मी हो जायेगी । इसीलिए इसका केवल एक ही इलाज है कि जितने ये मजहम के आदमी है, पन्थ हैं उनको चाहिए कि मानव जाति को जिन्दगी व्यतीत करने का ठीक तरीका बतायें कि हम किस प्रकार के विचार रखें । इसके अतिरिक्त उन्हें बजाय इस बात के कि राम–राम जपो और सारा दिन जो मरजी करो उनको कहे कि किस प्रकार के विचार रखें ।

दूसरा कारण यह है कि यह वर्तमान चुनाव पद्यति जो है यह एक मीठा जहर है । इसने हरेक मनुष्य को लालच और अपनी कुर्सी के लिए झगड़ा कर बना दिया जिससे देश में जो तबाही आ रही है मेरा विचार है कि अगर यह चुनाव पद्धति में परिवर्तन न किया गया तो—

"इबतदाये इश्क हैं, रोता है क्या
आगे–आगे देखना होता है क्या ।"

तीसरा चरित्र गिरने का कारण यह हैं कि जब तक सरकार शक्तिशाली नहीं है । हिन्दुस्तान के नेता सिर पटक कर मर जाय ये कभी भी देश में अमन और शान्ति नहीं ला सकते । मगर सरकार सख्त कैसे हो सकती है । इसे तो वोट लेने हैं । इसलिए तवाही आयेगी । जरूर आयेगी, अवश्यमेव आयेगी । यह क्यों कहता हूं ? मैंने जिन्दगी में सफर किया है । आखिरी मन्जिल पर पहुंचा हूं । वहाँ पहुंचकर मेरा यह अनुभव है । मैं ख्याल की ताकत और उसके प्रभाव को जानता हूँ । दुनिया प्रमाण चाहती है । मैं पुस्तकों का वर्णन नहीं करता । तुम देखो ! रात को स्वप्न में तुम्हें गुस्सा आता है, तुम किसी को मुक्का मारते हो तुम्हारा हाथ हिल जाता हैं । स्वप्न में तुम डर जाते हो तुम्हारी जवान बड़बड़ाती है । स्वप्न में तुम एक ख्याली औरत बना लेते हो तुम्हारा वीर्यपात हो जाता है । जब स्वप्न का तुम्हारा विचार जो तुम्हारे वस में नही है उसका प्रभाव भी सारे शरीर पर होता है । तो हम जागृत में जो कुछ ४२० हेरा फेरी, ईर्षा द्वेष एक दूसरें के साथ करते हैं इन विचारों के प्रभाव से कैसे कोई बच सकता हैं । इस समय

समाज में देश और राजनैतिक दल में जो कुछ हो रहा है। कितना आपस में ईर्षा द्वेष है। यह कर्म कोई न कोई भयंकर परिणाम सामने क्यों नहीं लायेगा। ऐसी हालत में कोई राष्ट्रपति या कोई भी पार्टी बचाने की कोशिश करें उसको असफलता हीं मिलेगी। अपनी जाति का मुझे पता लग गया। वहाँ पहुँच कर विचारों का जो नतीजा मुझे मालूम हुआ वह मैंने कह दिया।

चौथी बात यह है कि जब तक भारत वर्ष की राजधानी दिल्ली में है वहाँ की सरकार जो कुछ भी देश के लिए करेगी वह पूरा लाभप्रद नहीं हो सकेगा। क्यों ? दिल्ली में जबसे हस्तिनापुर कौरवों पाण्डवों कीं राजधानी थी उसके बाद जितनी भी सरकारे आई उनकी राजधानीं दिल्ली ही रहीं। वहाँ दंगे फिसाद होते रहे। सांइस कहती है पदार्थ कभी नष्ट नहीं होता उनके विचार उस वातावरण में मौजूद हैं। इसलिए जो भी वहाँ बैठकर राज्य करेगा उसके दिमाग पर वह पड़ेगे। और वह किसी हालत में भी ऐसी बात नहीं सोच सकेंगे जिससे मानव का कल्याण हो। इतिहास को पढ़ो। तुम देखो। जहाँ–जहाँ किसी अच्छे ऋषियों महापुरुषों या ज्ञानियों ने निवास रखा, तप किया वहाँ के वातावरण में जानवर भी जो एक दूसरे को नुकसान नहीं पहुँचाते थे। मैंने यह स्वयं अपनी आँखों देखा है। गगरेट हिमाचल प्रदेश के पास एक शिव बाड़ी नाम का एक जंगल है उसमें एक साधु रहता था जिसने वहां १२ वर्ष तप किया था उसके इर्द–गिर्द विभिन्न प्रकार के जानवर रहते थे जो एक दूसरे के विरोधी थे उसके आस पास फिरते रहते थे मगर वे एक दूसरे को नुक्सान नही पहुँचाते थे। बाहर की लहरों और धारों के प्रभाव की इस मौजूदकी के समस्या को तुम पुलिस वालों के कुत्तों के काम से भी आसानी से समझ सकते हैं। जिस वातावरण में दोषी के प्रभाव मौजूद है। उन्हें सूघते हुए जहाँ वह होता है उसे जाकर पकड़ लेते है और प्रमाण सुनो। साइंस वालों ने सौ–सौ वर्ष पहले Senate Hall में जो कहा गया था वह उन्होंने रिकार्ड किया। क्योंकि वह ब्रह्माण्ड में मौजूद है।

स्वतन्त्रता दिवस पर इस अनुभव के आधार पर जो मैंने प्राप्त किं कर्मों का फल जो परिणाम निकलेगा वह मैंने कह दिया। मैं सच्चे दिल स चाहता हूँ कि मालिक हम भारतवासिसों को सच्ची बुद्धि और सच्चा ज्ञान दे ताकि ये अपनी जिन्दगियों को बेहतर बना सकें। जो कुछ मैंने कहा यह मेरी जिन्दगी का निजी अनुभव है। मगर कोई दावा नहीं। यह समझ कर कि यह सब प्रकृति के वश में है। अपने आपको शान्त रखता हूँ।

—फकीर

...०...

राधास्वामी छात्र सत्संग का उद्घाटन

प्राचार्य श्री इन्द्रजीत शर्मा ने प्रबुद्ध जनता द्वारा आकांक्षा व्यक्त करने पर ग्राम खंडेह में छात्र सतसंग का उद्घाटन किया और उक्त अवसर पर उन्होंने छात्रों को निम्न श्लोक के आधार पर गुण विकसित करने का आह्वान किया :

काग चेष्टा, बकोध्यानम्, श्वान निद्रा तथैवच।
स्वल्पहारी, ब्रह्मचारी, विद्यार्थी पंच लक्षणम् ॥

उक्त पद की व्याख्या करते हुए आपने व्यक्त किया कि विद्यार्थी की कौए के समान चेष्टा होना अर्थात् अपने चारों ओर के क्रिया-कलापों के प्रति सावधान, बगुला के समान ध्यान मग्न अर्थात अपने लक्ष्य में रत, स्वान (कुत्ता) के समान निद्रा में भी सचेत, स्वल्पाहारी अर्थात् कम मात्रा में आवश्यकतानुसार भोजन करना और ब्रह्मचारी- मन, वाणी और शरीर से सम्पूर्ण अवस्थाओं में सदा सर्वथा सब प्रकार के मैथुनों का त्याग करना अर्थात् विषय-भोग से दूर

रहना चाहिए। आगे आपने समस्त या छः पद में वर्णित उक्त गुणों वाला पात्र ही सच्चा विद्यार्थी माना जा सकता है, साथ ही उक्त से युक्त विद्यार्थी विद्या प्राप्ति में अग्रणी होता है। सच्चाई यह है कि विद्यार्थी अवस्था ही किसी व्यक्ति के बनने या बिगड़ने का समय होता है।

आगे आपने व्यक्त किया कि ब्रह्म इस सृष्टि का रचियता हैं। इस स्थूल जगत में मानव प्राणी की उत्पत्ति वीर्य से होती हैं। इसलिए वीर्य का उपयोग केवल सन्तान उत्पत्ति हेतु ही करना चाहिए। ऐसा व्रतधारी व्यक्ति ब्रह्मचारी कहलाता है। ब्रह्मचारी का दूसरा अर्थ है- ब्रह्म के अनुरुप आचरण करने वाला अर्थात् सृष्टिकर्त्ता ब्रह्म में लीन रहना। वीर्य से ओज और ओज से उष्णता (प्रकाश) उत्पन्न होता है। प्रकाश ही सिद्धि-सक्ति का दाता है। जो व्यक्ति वीर्य को व्यर्थ खोता है, वह शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक रूप से ही नहीं, बल्कि आध्यात्मिक रूप से भी खोखला रहता है। ब्रह्मचर्य को नष्ट करना व्यक्ति असन्तुलन हो जाता है तथा निराशा के गर्त में गिर जाता है। उसकी स्मरण शक्ति क्षीण हो जाती है। इसलिए विद्यार्थी को कड़ाई से ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिये।

हमारे पूर्वज ऋषि-मुनियों ने ब्रह्मचर्य पर पर्याप्त बल दिया और उस काल में नवयुवकों से २५ वर्ष की आयु तक आश्रमो में रह कर ब्रह्मचर्य का पालन कराया जाता था, जिससे वे बुद्धिमान, तथा शरीर से बलिष्ठ होते थे, किन्तु इस युग में हमारे समाज के प्रत्येक अंग पर पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव पड़ा है। वहाँ ब्रह्मचर्य का कोई महत्व नहीं है। वासना तृप्ति की वहाँ पूरी स्वतन्त्रता है। साथ ही इस युग में सिनेमा का बड़ा प्रचार है और उनमें प्रेम के अनेक प्रसंग उपस्थित कर नवयुवकों को विलासिता की ओर आकर्षित किया जाता है।

राष्ट्रपिता महात्मा गान्धी ने भी "ब्रह्मचर्य ही जीवन है" एक पुस्तक लिखकर नवयुवको का मार्ग दर्शन किया था। प्राचीन काल में विद्यार्थी को ब्रह्मचारी ही कहा जा सकता था। खान-पान और रहन-सहन सदा सादा और परिश्रमशील जीवन ब्रह्मचारी का मुख्य नियम था, किन्तु इसके विपरीत आज भारतीय छात्र बड़ा शौकीन, स्वच्छन्द प्रकृति तथा ब्रह्मचारी गुणों से दूर हो गया है। अब वर्तमान युग की सर्वाधिक आवश्यकता है–विद्यार्थियों का सही मानव बनने के लिए ब्रह्मचर्य का पालन करना। विद्यार्थियों को याद रखना चाहिए कि किसी भवन की नींव, यदि कमजोर होगी तो वह भवन अधिक दिन खड़ा नहीं रह सकता। नवयुवक के जीवन की पक्की नींव उसका ब्रह्मचर्य है। अतः नवयुवक छात्र-छात्रायें ब्रह्मचर्य का पालन कर "सादा जीवन, उच्च विचार" वाली कहावत को चरितार्थ करें। किसी महापुरुष की ये पंक्तिया भी ध्यान देने योग्य हैं :

पान हान के सींचते, विरवा गया सुखाय।
माली सींचे मूल को- डाल, पात, फसलाय॥

होशियापुर वाले परम संत पं० फकीर चन्द जी महाराज ने भी अपने दिनाँक ८.७.७६ के प्रवचन में फरमाया था कि यदि संत मन को समझना चाहते हो तो जब तक प्रौण (Mature) न हो जाओ, तब तक मानसिक और शारीरिक ब्रह्मचर्य को बनाये रखो। जो व्यक्ति छोटी उम्र में गिर जाते हैं, उनको अशान्ति का आना प्राकृतिक है। वे आगे फरमाते हैं कि मुझे यह अनुभव हो गया है कि जिन व्यक्तियों के ब्रह्मचर्य गिर चुके हैं- उनको जल्दी शान्ति नहीं मिलती।

महेन्द्र कुमार शर्मा, उपमंत्री
मनीराम का बाड़ा, सराफा, क्वा.१

प्रवचन

हुजूर परमदयाल परमसन्त पं० फकीरचन्द जी महाराज
मानवता मन्दिर होशियारपुर (पंजाब)

दि० २६-८-८०

पूज्य बुजुर्गवाद आदरणीय ला० जगत नारायण जी महाराज

नमस्ते ।

कुछ आपको लिखना चाहता हूँ । फिर अपनी आत्मा से पूछता हूँ कि इसका क्या फायदा होगा ? जानता हूँ जो होता है, सो होगा । मगर अपने कर्म भोग बस और गुरु की आज्ञा बस घसीटा जा रहा हूं ।

हिन्द समाचार में आपके अक्षर पढ़े कि हमारे बच्चे किधर जा रहे हैं । मेरे अनुभव में बच्चो का कोई दोष नहीं । प्राय: हम सब विन बुलाई सन्तान हैं । स्त्री-पुरुष कामातुर होकर (out of control) मिलते हैं । बच्चे पेट में आ जाते हैं । जब बच्चे पेट में होते हैं, माताये जिस प्रकार के विचार मन में रखती हैं और बच्चे पेट में होते हुए भोग विलास करती रहती हैं तो उन बच्चे में वैसे कोई आशा कर सकता है कि अपने माता पिता के संस्कारों से मुक्त रह सकते हैं । मैं आशा करता हूँ कि आप ध्यान पूर्वक सोचेंगे । यहाँ तक मेरा अनुभव है मैं यह विश्वास के साथ कहना चाहता हूँ कि तुख्म की तासीर और सोहबत संगीत का असर कभी जाया नहीं करता ।बच्चों को कुछ तो माँ बाप के संस्कार कुछ मौजूद वातावरण व संगीत के प्रभाव से अधीन रहना पड़ता है । मैं आप का ध्यान इस ओर क्यों दिलाना चाहता हूँ ।

पात पात के सींचते वरवा भया सुखाये,
माली सींचे मूल को, डाल पात फल राये।

आप हिन्दू धर्म के सच्चे प्रचारक हैं। आपका काम प्रशंसनीय है, कहाबते-तारीफ हैं। आज कल हम लोग पुरानी संस्कृति का ढिंडोला पिटाते है। हिन्दू धर्म में से आतत्मऋषि, पहला मनु हुआ है। उसने सन्तान उत्पन्न करने के खास नियम बताये है। यदि हम लोग शुरुआत मंजिल में उस नियम के ही पैरोकार नहीं होते तो पुरानी संस्कृत क्या करेगी। कुछ फायदा अगर हो सकता है तो बच्चों को देह लगाओ यानि अर्थात् संस्कार अच्छे दो। संस्कार देने वाला अगर खुद अमल नहीं है तो उसका संस्कार कुछ फायदा नहीं करेगा। हकूमत के चलाने वाले खुद बेजप्त हैं। असैम्वलियों में क्या कुछ होता है आप जानते ही है। जिस तरह खट्टे वृक्ष को और मीठे वृक्ष की पेबन्द लगा दी जाये तो वह मीठा नहीं बनेगा। सन्तरा या मुसम्मी बन जायेगा। इस लिए अगर आप अपने विचार में इन सारी मुश्किलों की जड़ को समझ कर अपने भाषण या लेखों में मानव जाति के ध्यान को अच्छी सन्तान पैदा करने की तरफ तब-दील की कोशिश करें। तो शायद पढ़े लिखे समझदार लोगों में असलीयत का ज्ञान हो जाये। यदि वह चाहे तो अपनी जिन्दगियों को क्रियात्मक बना सकते हैं।

लाला जी ! दिल में दर्द है, बाहरी वातावरण से प्रेभावित होकर मैंने १५ अगस्त १९४७ को आवाज उठाई थी। 'इन्सान बनो' उस लाइन पर काम करता हूँ। रुहानीअत किसी को हासिल नहीं हो सकती जब तक वह इन्सानियत को अपनाये।

मैंने कुछ लेख आपके अखबार को भेजे थे। उन्होंने प्रकाशित नहीं किये। सच्चाई का न कोई खोजी है और न हकीकत को कोई समझने के लिए तैयार हैं। मैंने आपका वक्त लिया इसके लिए माफी

माफी चाहता हूँ।

मेरा जाति इलम मुझे सच कहता है परन्तु मैं दावा नहीं करता। जो ज्ञान मैंने हासिल किया है, उसके आधार पर तबाही, मुसीबतें अवश्यमेव होंगे। कोई हकुमत को मजहब कोई पंथ कोई सन्त इसको दूर नहीं कर सकता। क्या अजब! कि मेरी किस्मत में यह (नजारा) दृश्य देखना नसीब हो। आखिर

"तेरा भाणा मीठा लागे"

समझकर शान्ति लेता हूँ।

आपका प्रेमी
फकीर

सिया स्वयंवर

कोई यह न समझे कि यह प्रेम इक तरफा डिगरी है, आकर्षण शक्ति दोनों हीं तरफ से होती है, प्रेमी और प्रीतम! दोनों ही हृदय एक दूसरे की तरफ आकर्षित होकर झुके रहते हैं।

उधर सीता के हृदय में प्रेम बाण लगा, इधर उसी बाण ने उलट राम को भी घायल कर दिया। भेद इतना था राम धीर वीर गम्भीर थे अपने आप को सँभाल रक्खा। सीता का हृदय बहुत कोमल था वह सँभल न सकी, राम को छोटे भाई और गुरु का ध्यान था। उन्होंने गुरू के इष्ट पद को सर्व प्रिय बना रखा था। सीता का इष्ट कुछ नहीं था। उसने राम को अपना इष्ट बना लिया।

राम गुरू के आज्ञाकारी शिष्य थे। तन, मन, धन सब गुरू पर अर्पण। सीता पर भी किसी के आज्ञाकारी होने का बोझ नहीं था।

वह राम के देखते ही सौ जान से उन पर मोहित हो गई। तन, मन, बुद्धि, सोच विचार, समक्ष, बूझ सब कुछ बिना माँगे हुए राम के चरणों में न्यौछावर कर बैठी।

राम रात भर करवते बदलते रहे, नींद नहीं आई। कैसे आती ! वहाँ तो नींद की जगह किसी और ही शक्ति ने ले रक्खी थी। रात के समय आकाश में चन्द्रमा निकला, सीता का स्मरण आया सीता चन्द्र मुखी है, उसके रूप में सुन्दरता का तेज है। लेकिन चन्द्रमा और सीता में भेद है इसके मुह पर काले धब्बे पडे हुए हैं। सीता का मुख दोष रहित है। रात इसी बिचार में बीत गई। यह कुक्कड़ का शब्द सुन कर उठे। लक्ष्मण को जगाया। नहा, धोकर गुरू की पूजा सामग्री का ध्यान आया। जनक का माली कमल फूल की डाली दे गया था। सोचने लगे, सीता कमल के समान कोमल है, उसका गोरा रंग भी इसके श्वेत रंग से कुछ मिलता जुलता है, लेकिन वह कुछ और है और यह यह कुछ और है, इसमें बू, बास, रंग रूप सब कुछ सही लेकिन यह फूल है। सीता फूल नहीं है वह इस प्रकार सोचते हुए गुरू के सन्निकट आये नमस्कार किया। विश्वामित्र बोले, "राम आज थोड़ी देर पीछे स्वयंवरशाला में चलना है। तैयार रहना। मैं भी पूजा पाठ से निबट लेता हूं।"

राम ने कहाँ, "एवमस्तु सत वचन !"

अभी ऋषि पूजा ही में बैठे हुए थे, कि शतानन्द जनक का दीवान उन्हें बुलाने आ गया। शतानंद को कुछ देर वहा बैठना पड़ा। ऋषि उठे जटाजूट संभाली अंचला तन पर डाला और राजकुमारों के साथ धनुष मंडप में आये। मंडप मनुष्यों से खचा खच भरा हुआ था। तिल रखने को जगह नहीं थी। धनुष बीच में एक चबूतरे पर रखा हुआ था। उसके चौ फेर राजकर्मचारी

जनक के साथ बैठे हुऐ थे। आने जाने वालों के लिए बहुत जगह बीच में छूटी हुई थी। मंडप गोलाकार था। धनुष के चबूतरे के इर्द गिर्द बहुत सो गैलरिया बनी हुई थी, उनपर राजे महाराजे अपने अपने पदानुसार विराजमान थे। ऊपर और लोग बैठे हुए थे। इन सबके ऊपर गेलरी में रानियाँ और नगर की स्त्रियां बिठाई गई थी। मंडप मणि, मुक्ता से सजाया गया था, रंग बिरंगे फूलों के बन्दनवार लटक रहे थे। और मंडप में बैठे हुए तेजस्वी वीर अपने तेज में दमक रहे थे। जैसे कृष्ण पक्ष की अंधेरी रात में आकाश मंडल के तारे जगमगाते हैं।

विश्वामित्र सबसे पीछे पहुंचे थे इनके बैडने के लिए बीच की गैलरी में तीन कुर्सिया खाली रक्खी हुई थी। शतानन्द ने उन्हें लाकर उन पर बैठाया। राम का आगमन उस अवसर पर अत्यन्त आश्चर्य जनक प्रतीत हुआ। सारे राजे रात के तारों के समान दमक रहे थे, इन दोनों राजकुमारों के पहुंचते ही उनके चहरों का रंग उड़ गया। जैसे सूर्य के निकलने पर प्रभात के तारे तेज हीन हो जाते हैं। यह राजकुमार सूर्य वंश से थे।

मंडप में एक तरह का शोर सा मच गया। सब इनके देखने के लिए उठ खड़े हुए और राजकर्मचारियों ने बड़ी कठिनाई से उन्हें इसी अपनी जगह शान्ति से बैठाया।

जब विश्वामित्र और राम लक्ष्मण मचान (गेलरी) की कुर्सियों पर सुशोभित हुए। जनक की आज्ञा पाकर एक भाट (बंदीगण) उठा और दाहिने हाथ को ऊंचा करके ऊंचे स्वर से सब को सुना कर कहा 'राजे महाराजे महाशयगण ! आप पर विदित हो कि आज का दिन सीता राजकुमारी के स्वयम्वर के लिये नियत हुआ है। जो सबसे ऊंचे मचान पर स्त्रियों के साथ बैठी हुई है। बीच के चबूतरे पर एक धनुष रक्खा हुआ है।

जो मनुष्य इसे तोड़ देगा । सीता उसे ब्याह दी जायेगी । यह हमारे राजा की प्रतिज्ञा है। आपको आज ईश्वर ने सुकुमारी प्राप्त करने का अवसर दिया है । अपने-अपने बल, पौरुष, पराक्रम और सौभाग्य की परीक्षा करिये कराइये । सीता से सुन्दर कन्या आज इस जगत में कोई नहीं है ।

भाट ने उंगली सीता की तरफ उठाई । सबकी दृष्टि सीता पर पड़ी । वह मचान पर पूर्णिमा के चाँद के समान ऊंची बैठी हुई शोभायमान हो रही थी । सब उसे देखकर चकित हो गये ।

बारी-बारी से सारे सूरवीर, योधा, सूरमा उठे, धनुष इतना भारी था । कि उसने जगह नहीं छोड़ी , और टस से मस नहीं किया । यह लज्जित होकर अपनी अपनी जगहों पर आकर बैठ रहे । और सरों को झुका लिया, श्री हत हो गये ।

राजे महाराजे उठे, सब आये बल लगाया, धनुष को टलना ओर खिसकना नहीं था । वह न टला और न खिसका ।

एक लंकापति रावण रह गया था, साथियों ने उहने कहा 'तुम जाकर हाथ लगाओ' रावण ने दूर से हाथ जोड़कर धनुष को नमस्कार किया और कहा "यह गुरू की कमान है- शिवजी मेरे इष्ट गुरू हैं, मैं इसका अपमान और अनादर नहीं कर सकता ।" जनक ने रावण को बात सुन ली अब कोई पुरुष उस मंडप में ऐसा दिखाई नहीं पड़ा । जिसे धनुष के पास जाने का साहस होता– जनक को बड़ा शोक हुआ । थोड़ी देर तक राजा चुपचाप बैठा रहा फिर बैठा न गया– चबूतरे के पास खड़े होकर उसने हृदय बेधक शोर में सबको सुना कर कहा "महोदयगण ! पृथ्वी से रणवीर धीर, गम्भीर यौधा उठ गये । सूरमाओं का नाश हो गया । आप लोग यहा सुकृति और यश प्राप्त करने आये थे ।

आप सबके सब भाग्यहीन हैं, सीता के ब्याहने का साहस किसी में नहीं है। धनुष इतना बोझल हो गया कि तोड़ना तो अलग रहा, कोई उसे हिला तक नही सका। विधाता ने शायद सीता के लिये वर ही नहीं रचा। मैं क्या करूं वे बस हूँ प्रतिज्ञा कर बैठा। न यह धनुष टूटेगा और न सीता ब्याही जायेगी। मुझे बड़ा शोक है! आप मेरे पाहुने हो मैं आये हुए मेहिमान और अतिथियों का कोई अपमान नहीं करता। मैं अपमान के बचन नहीं बोलता साधारण रीति से कहता हूँ। पृथ्वी मंडल में अब वीर नहीं रहे। जाइये अपने अपने घरों को चले जाइय। अब जनकपुरी में रहकर क्या कीजियेगा।

यह कहकर जनक बैठ गया। ऊपर के मचान पर बैठी हुई स्त्रियों ने हाय-हाय करना और रोना भींकना मचा दिया। या तो यज्ञशाला पहिले आनन्दभूमि बनी हुई थी या अब वह स्यापे की जगह होगई। इस समय उस मण्डल में करूणा रस का जल अधिकता के साथ बरस गया, आये गये सबको दुःख हुआ जनक की रानी सीता को चिपटा कर रो पड़ी। हाय बेटी जगत में तेरे योग्य कोई वर नहीं हैं और रानी को रोती देखकर सब स्त्रियों ने मिलकर कुहराम मचा दिया।

—o—

परम संत कबीर साहब का एक भजन और इसकी व्याख्या

टेक:- ठगनी[1] क्या नैना झमकावै[2], तोरे कबीरा हाथ न आवे॥
कछू[3] काट मिरदगं बनाया, नीबू[4] काट मजीरा।

पाँच तुरइया मगंल गावे, नाचें बालम खीरा[6] ॥(१)
भैंस[7] पदमनी चूहा[8] आशिक, मेंढक[9] ताल बजावे ।
चोला पहर गवइया[10] नाचे ऊंट[11] विरान पद गावे ।
रूपा[12] पहरे रूप दिखावे, सोना[13] पहर रिझावे ।
गले डाल तुलसी की माला, तीन लोक भरमावे ॥(३)
आम[14] चढ़े मछली[15] फल तोड़े, कछुआ चुन २ लावे ।
कह कबींर सुनो भाई साधो, विरला अर्थ लगावे ॥(४)

(१) माया (२) आँख दिखाना—मोहित करना (३) गोलाकार ब्रह्माण्ड जड़ चेतन के दो अर्ध भाग जो दोनों बायें ओर से जुड़े हैं—पुरुष प्रकृति (४) पिंड–मनुष्य शरीर–जड़ चेतन के दो भाग, स्त्री पुरुष के रुप में जो दाये बांये स्थित है। (५) (एक प्रकार की हरी तरकारी) पांच ज्ञान इन्द्री जो इन्द्री ज्ञान के गीत गाती रहती हैं। (६) बड़ा खीरा—जीव आत्मा अहंकार के साथ जो मान बड़ाई का अभिमानी है।

२—(७) स्थूल माया– बड़ी स्याह रंग वाली माया–काली कराली (८) मनुष्य का चंचल मन। (९) चंचल चित्त। (१०) बिना विवेक विचार व विद्या बुद्धि रहित भक्ति जो माया का एक रुप है ।(११)अहंकार का रूप जो मन की विशेष वृत्ति है।

३—(१२) सगुन भक्ति जो माया के साथ है। (१३) निर्गुण भक्ति जो माया के साथ है।

४—(१४) अमृत का फल– भक्ति ना मिठास। (१५) मन की वह चंचल वृत्ति जो कल्पित एकाग्रता के भाव के योग का साधन करती है। (१६) एकाग्र वृत्ति।

माया नाना प्रकार के रूपवाली होती है। केवल सन्तों में ही यह सामर्थ्य है जो इसके मन लुभाने वाले चरित्रों अर्थात भरमाने वाली लीलाओं के जाल में नहीं आते। जो कुछ इस संसार में हो रहा है यह

केवल माया की ही चतुराई है। और माया "अन हुई" होती हुई भी तरह-तरह के नाच नचाती है, नचाती और भरमाती रहती है।

माया का प्रथम खेल यह है कि उसने कद्दू रूपी ब्रह्म के दो रूप बनाये। एक पुरुष दूसरा प्रकृति। और सारे जगत में इन्हीं दोनों की दुहाई दी जाती है।

माया का दूसरा चरित्र यह है कि नीबू के रूप वाले जीवात्मा को पुरुष और स्त्री के दो रूपों में प्रकट किया। और वह मजीरे की तरह टनटनाने लगे।

माया का तीसरा खेल यह है कि उसने पाँच इन्द्रियों को रच-कर उनको मंगल गाने के निमित्त उत्पन्न कर दिया और उनके बीच अहंकार युक्त जीवात्मा नाचने लगी, राग रंग की लीलाए होने लगी।

माया का चौथा खेल यह है कि वह भैंस यानी स्थूल जगत रूप और इसकी सामिग्री भोग विलास इत्यादि उत्पन्न करके मनुष्य के चंचल स्वभाव वाले 'मन' रूपी चूहे को अपना प्रेमी बनाया और मेंढक की तरह फुदकने वाला 'चित्त' रह रह कर ताल बजाने लगा। और जो प्राणी विषयासक्त थे, उसके माया जाल अथवा उसके प्रेम में बद्ध हो गये। कहाँ भैंस! और कहाँ चूहा, कहाँ जीव का क्षुद्र हृदय और कहाँ माया के अपरम्पार आडम्बर! परन्तु वह तो इस भैंस के पीछे पड़ा ही रहता है।

माया का पाँचवा खेल यह है कि उसने वेष्टी माया अथवा अविद्या का स्वरूप धारण कर अविवेक और ज्ञान के रूप में भक्ति का जाल फैलाया। और तरह-तरह के चौले बदल-बदल कर गधी की तरह हाथ पाँव मारने लगी। और अहंकार युक्त जीव आत्मा उसका अभिमानी बन कर 'विशन पद' भजन मस्त

होकर गाने लगा। इस प्रकार की भक्ति अति अधम है अथव निकृष्ट है।

माया का छटा चरित्र यह है कि चाँदी के आभूषण पहनकर रूपवती बन गई और सगुन भक्ति का प्रचार किया। लोग उसपर रीझ गये।

माया का सातवा खेल यह हुआ कि उसने निर्गुण रुप बनाकर निरगुण भक्ति का साज सजाया और सौने के वस्त्र पहन कर सबको मोहित कर लिया। गले में तुलसी की माला डाल ली। बाहरी स्वाँग बनाया और तीनों लोकों को जाल में फास लिया। तीन प्रकार की भक्ति केवल माया के खेल हैं। और कुछ नहीं, न जीवों को ज्ञान होता है न अपने और माया के रुप को ही समझते हैं– और इसी कारण स्थूल और सूक्ष्म रूपों पर जी जान से अपने को न्यौछावर कर देते हैं। यह सब खेल तो हुये अब माया ने आठवा खेल रचा।- जोग जुतन की रोति चलाई, जीव उसकी ओर चला। योग साधन में लगा उससे दो प्रकार की वृत्तिया उत्पन्न हुई। एक तो मछली की भाति चंचल जो एकाग्रता के मिठास की वासना को लेकर आम के वृक्ष पर फल तोड़ने को दौड़ी। आम और आम के फल का मिठास एकाग्रता का आनन्द है और दूसरी वृत्ति कछुए के रूप वाली एकाग्रता की वृति हैं। जो इस मिठास में लीन होती है : पहले तो वह सिमट सिमटा कर उसमें लीन होता है। फिर उटठा (उठान) के समय फिर हाथ पांव निकालता है। और जन्म मरण के चक्र से नहीं छूटता। यह आठ प्रकार के माया के खेल है। इसी कारण पुराणों में इसको अष्टाँगना गौरी कहा है। साराँश यह है कि जब तक ज्ञान न हो तब तक जीव इसी प्रकार के आँठों चरित्रों में फंसे रहते हैं।

—०—

सन्त वाणी से

(१) सब घट मेरा साइयाँ, सूनी सेज न कोइ।
वा घट की बलिहारियाँ, जा घट परगट होइ ॥

[कबीर

मेरा साई हर घट के अन्दर मौजूद है,
एक भी सेज नहीं, जो मेरे प्यारे सजन से सूनी है।
पर बलिहारी तो उस घट को है-
जिसमें प्रकट हो वह प्यारा साई दीदार देता है।

(२) पावकरूपी साइयाँ, सब घट रह्या समाय।
चित चकमक लागै नहीं, ताते बुझ-बुझ जाइ ॥

[कबीर

मेरा साई आग की नाई,
घट-घट में समाया हुआ है।
पर लगन के चकचक से चित्त लगे तब न-
इसीसे तो मेरी यह लौ बुझ-बुझ जाती है।

(३) सब घट माहीं रमि रह्या, बिरला बूझै कोइ।
सोई बूझै राम को, जो रामसनेही होइ।

[दादूदयाल

राम मेरा रम तो हर घट में रहा है,
पर इस भेद को समझता कोई बिरला ही है।
राम की अलख व्यापता को तो वही समझेगा,
जो उसके प्रेम के गहरे रंग में रंगा होगा।

(४) 'धरनी' तन में तखत है, ता ऊपर सुलतान।
लेत मीजरा सबहि का, जहंलौ जीव जहान ॥

[धरनीदास

इस तन के अन्दर ही तो वह शाही तख्त है,
जिसपर हमारा शाहों का शाह आसीन है।
जहान में जितने भी जीव है,
वहीं से बैठे-बैठे वह सबका मुजरा लिया करता है।

मौज मालिक मनुष्य बनो मौज मालिक

शुभ समाचार

दयाल मानवता प्रचारक सभा (रजि०) राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली

२६ वाँ वार्षिक दशहरा मानवता

सन्त सम्मेलन

जा पल दर्शन साध का, ता पल की बलिहार।
सत्त नाम रसना बसे, लीजे जन्म सुधार।

'मानवता सन्त सम्मेलन' दशहरा के शुभ अवसर पर सलवान पब्लिक स्कूल, राजेन्द्र नगर, (ओल्ड) नई दिल्ली में दिनांक १६ व २० अक्टूबर, १६८० को परम सन्त हजूर पीरेमुंगा साहिब जी महाराज की अध्यक्षता में होगा। इस शुभ अवसर पर हिज होलिनैस परम सन्त परमदयाल पं० फकीर चन्द जी महाराज (होशियारपुर वाले) अपने ६४ साल के जीवन अनुभव सत्यता तथा तपस्या के आधार पर बड़े सरल रूप में आपको बतायेंगे कि किस प्रकार गृहस्थ में रहते हुए सच्चे मानव बनकर संसारिक कर्तव्यों का पालन करते हुए शान्ति, आनन्द, प्रेम, निश्चिन्त और मालिक की मौज में रहकर मोक्ष को प्राप्त कर सकते हैं। इनके अतिरिक्त महा अनुभवी सन्त पुरुष अपने विचार आपके सम्मुख रखेंगे। सत्यता के जिज्ञासू ठीक समय पर पधार कर इस अनमोल और शुभ अवसर पर लाभ उठायें।

प्रोग्राम

१६ अक्टूबर, १६८० (रविवार) प्रातः ६ से १२ बजे तक सायं ३ से ५ बजे तक

२० अक्टूबर ,, (सोमवार) प्रातः ६ से १२ बजे तक

नोट :-(१) दिल्ली से बाहर के आने वाले प्रेमी भाइयों के लिये लंगर तथा ठहरने का प्रबन्ध पहले की भाँति सभा की ओर से होगा। यह प्रबन्ध केवल १६ अक्टूबर (प्रातः व सायं) और २० अक्टूबर केवल प्रातः के लिये होगा। कृपया अपने विस्तर अपने साथ अवश्य लायें।

(२) दिल्ली से बाहर के आने वाले प्रेमी भाई किसी भी समय पर सलवान स्कूल में १८–१०–८० को आकर ठहर सकते हैं।

निवेदक तथा दर्शनाभिलाषी :–

नन्दलाल सचदेव, आनरेरी जनरल सैक्रेट्री, दयाल मानवता प्रचारक सभा रजि. दुकान नं० १०६ के पीछे शंकर रोड, मार्केट, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-२०

—०—

अपील

प्रिय पाठक–गण,

राधास्वामी।

माह सितम्बर,-१९८० का अंक आपके हाथों में है। हमें आपसे निवेदन करना है कि यह अंक इस वर्ष का बारहवाँ अंक है लेकिन अभी तक पचास प्रतिशत भाइयों ने अभी तक पत्रिका का वार्षिक मूल्य जो केवल सात रुपया मात्र है नहीं भेजा है। एवं बहुत से भाइयों ने तो २ से ३ वर्ष तक का चंदा नहीं भेजा है जिसकी बजह से हमें मजबूर होकर पत्रिका बंद कर देनी पड़ी है। और पत्रिका को गहन आर्थिक कठिनाइयों में से गुजरना पड़ रहा है। चूँकि पत्रिका केवल भाइयों के द्वारा भेजे गये वार्षिक शुल्क पर ही आधारित है। या कुछ दानी बहिन भाइयों द्वारा दान प्राप्त होता रहता है। जिनकी बजह से हम आपकी सेवा करते रहते हैं। इस समय हर चीज पर तेजी आई हुई है। और पत्रिका संकट मय दौर में गुजर रही है अतः सभी भाइयों से निवेदन है कि जिन भाइयों ने अपना वार्षिक शुल्क नहीं भेजा वह शीघ्र ही भेजने का कष्ट करें एवं पत्रिका के लिए कम से कम दो ग्राहक और बनाने की कोशिश करें ताकि हम गुरू महाराज के प्रवचनों को अधिकता से लोगों में पहुंचा कर गुरु सेवा कर सकें।

प्रकाशक एवं सम्पादक

सुधा मीतल

सूचना--अलीगढ़ शहर में कर्फ्यू के कारण हम पत्रिका आपको समय से नहीं भेज पा रहे हैं। इसके लिए क्षमा चाहते हैं। प्रकाशक